'स्वतंत्रता' यानी विकसित आत्म-तंत्र

किसी को भी बंधन पसंद नहीं। पिंजरे के पक्षी को भी आकाश की उड़ान पसंद है। किसी देश की चारों सीमाएं निश्चित न हों तो उस ज़मीन के झगड़े में और व्यक्तियों की भावनाओं का भी बंधन हो तो निश्चित ही स्वतंत्र महसूस नहीं हो सकता। अपने देश में भी परायों की हुकूमत के तले हम आज़ाद अनुभव नहीं करते थे, उससे मुक्ति मिली और हम स्वतंत्र हुए। पर स्वतंत्र होने के बाद भी क्या आज हम अपने जीवन को कम्फ़र्टेबल अनुभव करते हैं? ज़्यादातर लोगों का उत्तर 'ना' में ही होगा। 'स्वतंत्र' शब्द को अगर हम समझें तो स्व+तंत्र। 'स्व' माना स्व-अस्तित्व। स्वयं का तंत्र। 'तंत्र' यानी एक शासन-व्यवस्था प्रणाली। यानी कि स्व-अस्तित्व का तंत्र माना अपने ऊपर सम्पूर्ण अधिकार, सम्पूर्ण कंट्रोल, सम्पूर्ण रूल होना। जिसमें ये गुण व शक्ति है वो ही स्वतंत्र है।

आज हम आज़ाद हुए सिर्फ तयशुदा ज़मीन की परिधि में रहने के लिए। पर आज भी हम अपने कई अधिकारों की लड़ाई लड़ ही रहे हैं। क्या हम इससे भी स्वतंत्र हो पायेंगे? ये बात सभी के मन में कभी न कभी आती ही है। और शायद हम इसे असंभव भी मान लेते हैं। लेकिन हम आपको ये बताना चाहते हैं कि आज भी देश में ऐसा एक वर्ग है जो स्वतंत्र अर्थात् आत्म+तंत्र के अनुरूप आज़ाद जीवन व्यतीत करते हुए समस्त सृष्टि के लिए एक आदर्श है। आत्म+तंत्र को विकसित करना और आध्यात्मिक नियमों का पालन करते हुए, स्वयं के तंत्र को चलाते हुए आज़ादी महसूस करना, यही वास्तव में स्वतंत्रता है।

ब्र.कु. गंगाधर

आत्म+तंत्र क्या है? अगर हम बहुत सारी बातों को न लेते हुए निष्कर्ष पर पहुंचें तो मानव की मूलभूत आवश्यकतायें सात शब्दों में निहित हैं। जिसे ये सात शब्द सही मायने में अर्थ सहित प्राप्त हों, वो स्वतंत्र है। ये सात शब्द हैं सुख, शांति, आनंद, प्रेम, ज्ञान, शक्ति और पवित्रता। ये शब्द आपने कई बार सुने होंगे और इसको पाने के लिए सुबह से शाम तक दौड़ते ही रहते हैं, बस दौड़ते ही रहते हैं।

हमने कई बार ये गीत सुना है... 'जिसकी रचना इतनी सुंदर वो कितना सुंदर होगा...!' और दूसरी तरफ ये भी गीत गुनगुनाते रहते... 'ईश्वर सत्य है, सत्य ही शिव है, शिव ही सुंदर है...। राम अवध में, काशी में शिव, कान्हा वृंदावन में... दया करो प्रभु देखूं इनको हर घर के आंगन में...।' यदि हम इन पंक्तियों की गहराइयों को समझें तो हम जान सकते हैं कि कहीं न कहीं ऐसी दुनिया भी तो होगी न! जो होगा उसका ही तो गायन होता है ना! उसको ही तो याद किया जाता है ना! जिसका अस्तित्व ही नहीं, जिसका कोई चित्र ही न हो तो उसका चरित्र भी तो नहीं होगा। न ही हमें लुभायेगा उसे प्राप्त करने के लिए। अधिक विस्तार में न जाते हुए ये कहना चाहते हैं कि जब परमात्मा ने सृष्टि रची, मानव के रूप में उसने अपनी सबसे सुंदर रचना बनाई तो सबकुछ प्रचुर मात्रा में भरपूर करके ही इस दुनिया में भेजा होगा। कहने का भाव ये है कि हम सब आत्मा ऊपर से आये यहां अभिनय करने, खाली हाथ से तो परमात्मा ने नहीं भेजा होगा! जो भी हमारे जीने के लिए आवश्यकता होगी, वो भी तो साथ में दिया होगा ना! सिर्फ आत्म-दर्शन करने की ज़रूरत है। आत्म+तंत्र कहें या स्व+तंत्र कहें, बात एक ही है। आत्म-तंत्र को विकसित करना और उन गुणों के अनुरूप जीवन जीना ही स्वतंत्रता है। स्व+तंत्र का मतलब ही है स्वयं में मौजूद सारी खूबियों, सारी विशेषताओं, सारी योग्यताओं और कुशलताओं को निखारना। इस तरह से जब हम जीवन जीना सीख जायेंगे तो अपने आप में हम स्वतंत्र ही होंगे। ज़मीन, आकाश सब कुछ अपना महसूस होगा, आज़ाद फीलिंग होगी और विकसित भी। ये सबकुछ परमात्मा का है, उनका ही बख्शा है और उन पर हम सबका एक समान अधिकार है। इस भावना के साथ ही हम सबको जीना है। 'मैं और मेरापन' के भान से निकलना ही सच्ची स्वतंत्रता है।

हलचल को समाप्त करने का साधन है - बाबा से बातें करना

जहाँ दिल का सच्चा स्नेह और विश्वास है वहाँ मैं और तू, तेरा और मेरा सब समाप्त हो जाता है। आपकी महिमा सो मेरी महिमा। आपकी बड़ाई सो मेरी बड़ाई इसलिए हम अपने समान साथी को इतना रिगार्ड दें जो वह आपेही हमें दे, कहना न पड़े, यह हमारी ईश्वरीय मर्यादा है।

हरेक की विशेषता को देखना है। हरेक में बाबा ने कोई न कोई खूबी ज़रूर भर दी है। बड़ी बड़ाई बाबा की है, मेरा नहीं। सदैव अपने सामने लक्ष्य हो, 'बाबा'। बाबा ने हमें निमित्त बनाया है।

लॉ उठाना, टोन्ट कसना, टोक देना, यह मेरा काम नहीं है। मैं कभी भी अपने हाथ में लॉ नहीं उठा सकती। हमें बाबा जो सेवा देता उसे दिल से करना है। किसी से भी रीस नहीं करनी है। बाप समान बनने की रेस ज़रूर करनी है।

हरेक की बात का भाव समझना है, स्वभाव को नहीं देखना है। अगर किसी की गलती दिखाई भी देती है तो बाबा ने हमें समाने की शक्ति भी दी है। कभी एक की बात दूसरे से वर्णन नहीं करना है। भल सुनो, लेकिन उसे वहीं पर सुनी अनसुनी कर दो। भूल को अन्दर रखने से वायब्रेशन खराब होता है। दूसरे की भूल को अपनी भूल समझो।

अपनी स्थिति को सदैव सुखमय रखो। कभी भी तंग दिल, उदास दिल नहीं बनना है। कोई झूठा अपमान करेगा, कोई सच्चा। दुनिया की टक्करें

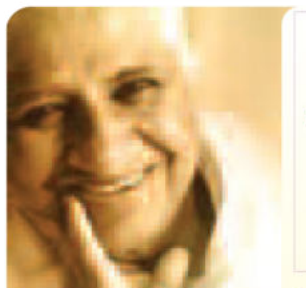
राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

कभी एक की बात दूसरे से वर्णन नहीं करना है। भल सुनो, लेकिन उसे वहीं पर सुनी अनसुनी कर दो। भूल को अन्दर रखने से वायब्रेशन खराब होता है। दूसरे की भूल को अपनी भूल समझो।

अनेक आयेंगी लेकिन हमें उदास नहीं होना है। पत्थर भी पानी की लकीरें खा-खाकर पूज्यनीय बनता है। तो हमें भी सबकुछ सहन करके चलना है। हलचल को समाप्त करने का साधन है - बाबा से बातें करना। बाबा के पास जाओ तो बाबा आपेही कदमों में बल भल देगा और मुझे किसी भी आत्मा पर डिपेंड नहीं करना है। आत्मा पर डिपेंड करने से बैलेन्स बिगड़ जाता है। बाबा पर डिपेंड करो। एक-दो का आधार लेकर चलना बिल्कुल गलत है। मुझे तो साथी चाहिए, सहयोग चाहिए... नहीं। मेरा साथी एक बाबा है। मैं बाबा से ही सहयोग लूँ।

दूसरों को सन्तुष्ट करना - यह बहुत बड़ा पुण्य है। इससे हमारी आत्मा को बल मिलता है। किसी के गुणों पर मोहित नहीं होना है। सदा बाबा को आगे रखो। बाबा को आधार बनाओ तो किसी में भी फसेंगे नहीं।

विघ्नों से कभी घबराओ नहीं। विघ्न भल कितना भी बड़ा हो लेकिन अपने संकल्प से कभी भी बड़ा नहीं करो। जड़ से समझकर बीज को काटो। जड़ क्या है उसको समझो।

माया से डोन्टकेयर करना ठीक है, आपस में नहीं। जो आपस में डोन्ट केयर करते उनकी जबान पर लगाम नहीं रहता। जो आता वह बोल देते, यह स्वभाव भी डिससर्विस करता है।

ज़िद्द का स्वभाव ही ज्ञान में बहुत विघ्न डालता है। ज़िद्द वाले अपना और दूसरों का नुकसान करते हैं। जहाँ जी हाँ का स्वभाव है वहाँ सब फूल बरसाते, दुआयें देते, जहाँ ज़िद्द है वहाँ पानी के मटके भी सूख जाते हैं। हमारे अन्दर अनुमान, परचिन्तन, ईर्ष्या, द्वेष आदि का कांटा नहीं होना चाहिए। इन कांटों को इस यज्ञ में स्वाहा करो।

जहाँ नियम है वहाँ संयम है। जहाँ कायदा है वहाँ फायदा है। ईश्वरीय मर्यादा ही हमारा स्वधर्म है। सबसे प्रेम करो लेकिन प्यार मत दो, बाबा से सम्बन्ध जुटाओ स्वयं से नहीं। किसी से हल्का व्यवहार मत करो। गम्भीर रहो। हंसी मज़ाक से भी बहुत नुकसान होता है इसलिए ऐसी हंसी नहीं करो।

निमित्त बनने के साथ-साथ निर्मान और निरहंकारी बनें...

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

तपस्या का अर्थ ही है मन की एकाग्रता। शरीर की भी एकाग्रता और मन की भी एकाग्रता। कुछ भी हो मेरा मन नीचे न आये। हम सबको अभी कर्मक्षेत्र पर रहते कर्मातीत स्थिति का अनुभव बढ़ाना है। कर्मातीत का अर्थ यह नहीं कि कर्म से अतीत व न्यारे हो जायेंगे, इन्द्रियां हैं तो कर्म तो करना ही है। बैठना भी कर्म है, आँख खोलना, याद करना... यह सब कर्म ही तो है। यह कर्म तो करना ही पड़ेगा, हम कर्म से अतीत नहीं हो सकते लेकिन कर्म हमको अपनी तरफ खींचे नहीं। जैसे पेन कीलर का इंजेक्शन लगाने से पेन खत्म हो जाता है। दर्द अपनी तरफ खींचता नहीं है। ऐसे ही कर्मातीत स्थिति अर्थात् कोई भी कर्म के फल स्वरूप जो संस्कार हमारे बने हैं। वो संस्कार और यह संसार अथवा कोई भी कर्म का बन्धन अपनी तरफ खींचे नहीं - इसको कहते हैं कर्मातीत स्थिति। तो हम सबका लक्ष्य तो यही है।

पाण्डवों में नम्बरवन अर्जुन को दिखाते हैं, उसने विजय प्राप्त की। चाहे मेहनत बहुत ली लेकिन आखिर तो विजयी नम्बरवन बना। तो यह जो संगठन है, निमित्त हैं, तो निमित्त बनने वालों को सदा हर संस्कार पर विजय ज़रूर प्राप्त करनी है तभी वन नम्बर अर्जुन बन सकते हैं। संस्कार तो हर एक में अपने-अपने हैं। किसके पास दो मुख्य संस्कार होंगे, बाकी बाल-बच्चे होंगे। किसके पास ज़्यादा होंगे, किसके पास कम हो सकते हैं। लेकिन हर प्रकार के कमज़ोर संस्कार को विन करना यही वन नम्बर अर्जुन बनना है।

बाबा ने हम लोगों को गोल्डन चांस दिया है, हम बहुत अच्छे-अच्छे संकल्प भी करते हैं परन्तु उसको निभाने में थोड़ा फर्क पड़ जाता है। बाबा के प्यार का सब दिल से रिटर्न देने की प्रतिज्ञा तो करते हैं क्योंकि रिटर्न नहीं देंगे तो बाबा के साथ रिटर्न कैसे चलेंगे? हमारी रिटर्न जर्नी भी तो है ना।

तो रिटर्न जर्नी के लिए पहले बापदादा ने जो प्यार दिया है उसका रिटर्न करना है। रिटर्न में बापदादा क्या चाहता है? जो भी निमित्त बच्चे हैं वो एक-एक विश्व राज्य का अधिकार प्राप्त करें, यही बाबा की शुभ आशायें हैं। तो जो निमित्त हैं, वो सोचें कि हम वर्ल्ड की स्टेज के हीरो एक्टर हैं। बाबा ने कुछ तो विशेषता देखी है ना! ऐसे ही थोड़े ही निमित्त बना दिया। लेकिन वो विशेषता हम कहाँ तक कायम, अविनाशी रखते हैं, वो हमारे ऊपर है। यह विशेषतायें भी प्रभु प्रसाद हैं, इससे हम निमित्त बनने के साथ निर्मान व निरहंकारी भी बन जायेंगे क्योंकि कोई भी विशेषता है, उसको अगर हम अपनी समझ लेते हैं तो बहुत नुकसान है। मेरी तो है ही नहीं क्योंकि मरजीवे जीवन में बाबा ने जन्म लेते ही हमको वरदान में विशेषता दी है। तो उस हिसाब से हम विशेषता को यूज़ करें और सदा निमित्त भाव याद रहे।

किसी की खामी को अपनी वृत्ति-दृष्टि में रखना यही सबसे बड़ी भूल है...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा रोज़ इतनी अच्छी नई बात सुनाता रहता है, जो सारा दिन बार-बार वह बात याद आती है। जैसे आज सुनाया कि किसी की खामी नहीं देखो, खामी देखना यह बड़ी खामी है क्योंकि संगम का समय है, घर जाने की तैयारी कर रहे हैं। नाटक में हरेक का पार्ट अपना-अपना है पर मेरा पार्ट क्या है। तो अपने पार्ट को देख मूँझो नहीं, पूछो नहीं। हरेक के पार्ट की अगर खूबी दिखाई पड़ रही है ना, तो कहेंगे बहुत अच्छा है, अगर खामी दिखाई पड़ रही है तो कहेंगे यह अच्छा नहीं है। इसकी यह खूबी वन्डरफुल है, भले वो खूबी मेरे में नहीं है, लेकिन मैं कोई निराश नहीं हूँ पर साक्षी होके देखते हैं तो बहुत अच्छा लगता है, बाबा मेरा साथी है, बाबा के संग रहने से साक्षी होके देखना, प्ले करना बहुत अच्छा लगता है।

अभी हरेक एक सेकण्ड के लिए इस फीलिंग में आओ कि बाबा मेरा साथी है। मैं उसका बच्चा हूँ ना। बच्चा दिन-रात माँ-बाप के संग में रहता है तो उसके संस्कार भी वैसे बन जाते हैं। तो साक्षी और साथी दोनों का बल मिलता है। साक्षी हैं तो संगठन की शक्ति का स्नेह मिलता है। फिर बाबा के साथ का बल निराकारी और अव्यक्त स्थिति का अनुभव करा देता है। बाबा ने कैसे अपनी अव्यक्त स्थिति बनाते सम्पूर्ण स्थिति धारण कर ली। तो जी चाहता है ऐसा ही हम सब भी मिल करके पुरुषार्थ करें और उस सम्पूर्ण सम्पन्न अवस्था को प्राप्त कर लें। अभी-अभी यहाँ हैं, अभी-अभी वतन में हैं। यहाँ निमित्त मात्र हैं, सेवा अर्थ हैं, यह सेवा का चांस फिर नहीं मिलेगा।

एक बारी बाबा से पूछा कि जब बाबा खाता नहीं है तो भोग क्यों लगायें? बाबा ने कहा यह भी रिगार्ड है, आखिर भी खिलाने वाला वो है। उसको स्वीकार न कराके, ऐसे ही जीभ रस वश खाना... गीता में लिखा है वो चोर है इसलिए याद में रहके, भोग लगा करके खाना ईमानदारी है। हम कर्मेन्द्रियों के वश नहीं हैं इसलिए कहा जाता है शिवा बाबा के भण्डारे से ब्रह्माभोजन स्वीकार करते हैं। एक-एक शब्द अर्थ सहित है। जब भी कोई लिफाफा देते हैं तो कहेंगे भण्डारे के लिए है। इस यज्ञ में बीज बोने से कितना भाग्य बन जाता है। भावना है कि यह भगवान का यज्ञ है। सुदामा मिसल थोड़ा-सा कणा दाना सफल करके अपने को धन्य समझते हैं। जिसके पास ज़्यादा पैसे होते हैं वो सोचते ही रहते हैं इसलिए थोड़ा होगा तो अच्छा है, बाबा खिलायेगा।

मेरे से भूल हुई या किससे भी हुई उसे फिर से सोचो नहीं, बोलो नहीं, देखो भी नहीं क्योंकि देखते हैं तब तो कहते हैं कि मैंने देखा ना इसकी यह भूल थी, कितने समय से यह ऐसी भूलें करता आ रहा है इसलिए देखो ही नहीं क्योंकि यह सोचना, बोलना, अन्दर वृत्ति-दृष्टि में रखना यह बहुत बड़ी भूल है। मानो कल भी किसी ने भूल की तो वह आज याद न आवे।